Q. 5

Examine the principle of Maximum Social Advantage. What is its limitation?

अधिकतम सामाजिक लाभ के सिद्धांत की व्याख्या किजिए ? इसके कौन–कौन से सीमाएँ हैं?

Explain the doctrine of maximum Social Advantage as a fundamental principle of public finance?

लोक वित्त आधारभूत सिद्धांत की व्याख्या कीजिए?

Discuss the Bric principle as the best principle of public finance?

Ans. - सरकार सार्वजनिक व्यय करने के लिए लोगों पर कर लगाती है। कर लगाने से लोगों को त्याग करना पड़ता है। एवं सार्वजनिक व्यय से उपयोगिता प्राप्त होती है। इसे सरकार की राजस्व की क्रिया कहा जाता है। अब प्रश्न यह है कि सरकार को जिस सिद्धांत के आधार पर राजस्व की क्रियाओं का आधार पर राजस्व की क्रियाओं का संचालन करना चाहिए जिस सिद्धांत के आधार पर सरकार अपनी राजस्व की क्रियाओं का संचालन करती है। उसे अधिकतम सामाजिक लाभ का सिद्धांत कहा जाता है।

DALTON- Best system of public finance is that which secures the maximum social Advantage from the operation which conducts.

प्राचीन अर्थशास्त्रिओं जैसे एडम स्मिय Ricardo J. B. Say आदि अर्थशास्त्रियों का विचार था कि सरकार की राजस्व की क्रिया न्यूनतम होनी चाहिए क्योंकि उनके प्रत्येक कर एक अभिशाप होता है। (Avery tax an evil)'' प्रत्येक सार्वजनिक व्यय अनउत्पादक होता है। एवं प्रत्येक निजी व्यंग जो कर से वंचित होता है।

लेकिन आधुनिक अर्थशास्त्री प्राचीन विचारधारा से सहमत नहीं है। मादक पदार्थों पर लगाया गया कर अभिशाप नहीं होता एवं स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर किया गया व्यय अनउत्पादक नहीं होता। वर्तमान समय में विश्व का अधिकांश राष्ट्र– कल्याणकारी राज्य है। जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों के कल्याण में वृद्धि करना है। लोगों के कल्याण में वृद्धि करने के लिए सरकार को अधिक रकम व्यय करना पड़ता है इसलिए राज्य को कर भी अधिक लगाना पड़ता है। इसलिए आधुनिक समय में राजस्व को क्रियाओं में प्रसार आवश्यक हैं।

Daltan के अनुसार : → राजकीय व्यय प्रत्येक दिशा में उस सीमा तक बढ़ाते रहना चाहिए जब तक की करों में वृद्धि से अपने उत्पन्न होने वाला असन्तोष व्यय में वृद्धि से प्राप्त होने वाला सन्तोष के बराबर न हो, जाए यहि सीमा राजकीय आय एवं व्यय में वृद्धि करने की आदर्श सीमा है।

अर्थात Daltan के अनुसार जब व्यय की सीमान्त उपयोगिता करों के सीमांत त्याग के बराबर हो जाय तभी समाज को अधिकतम लाभ प्राप्त होगा।

PIEGOU:- ने अधिकतम समाजिक लाभ को अधिकतम सामुहिक कल्याण कहा है।

AS = F (t.e) -
- As = समाजिक लाभ
- t = Tax
- e = Expenditure

$AS = \mu_e - S_t$
- μ = उपयोगिता
- t = लाभ

अधिकतम समाजिक लाभ के लिए

$$\frac{dAS}{dx} = \frac{d\mu_e}{dx} - \frac{dS_t}{dx} = 0$$

$$\text{or } \frac{d\mu_e}{dx} = \frac{dS_t}{dx} \text{ or } M\mu_e = MS_t$$

अर्थात जब सार्वजनिक व्यय की सीमान्त उपयोगिता करों के सीमान्त त्याग के बराबर होगी तभी अधिाकतम सामाजिक लाभ की प्राप्ति होगी।

$$\frac{d^2AS}{dx^2} = \frac{d^2\mu_e}{dx^2} - \frac{d^2S_t}{dx^2} < 0$$

$$\frac{d^2\mu_e}{dx^2} < \frac{d^2S_t}{dx^2}$$

$$\frac{d}{dx}\left(\frac{d\mu_e}{dx}\right) < \frac{d}{dx}\left(\frac{dS_t}{dx}\right)$$

अर्थात सीमांत उपयोगिता वक्र की डाल सीमांत त्याग वक्र की ढाल से कम होनी चाहिए।

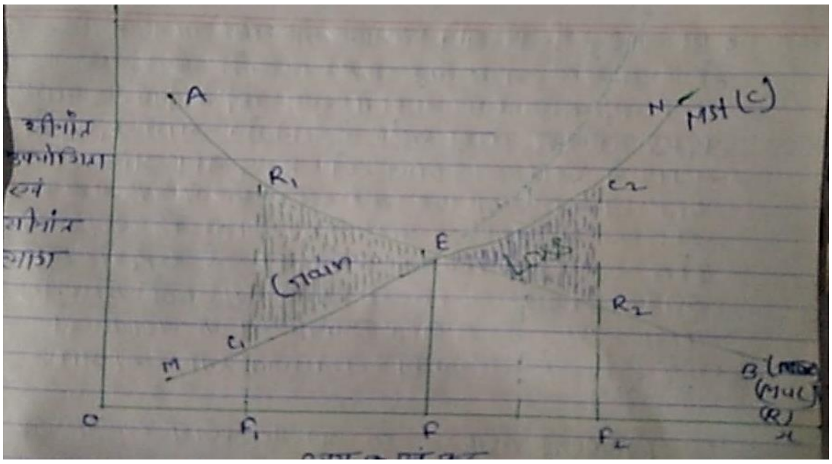

व्यय एवं कर

इस रेखाचित्र में X अक्ष पर कर एवं व्यय इस y अक्ष पर सीमांत उपयोगिता एवं सीमांत व्यय मापा गया है AB सार्वजनिक व्यय के सीमांत उपयोगिता का वक्र है जो B उपर से नीचे दाहिनी ओर झुकती है एवं बतलाती है की व्यय में वृद्धि से इसकी सीमांत उपयोगिता धटती है। MN करों के सीमांत त्याग का वक्र है जो नीचे से उपर दाहिनी ओर बढ़ता है। यह बतलाता है कि करों में वृद्धि से सीमांत त्याग में वृद्धि में वृद्धि होती है। E बिन्दु पर व्यय का सीमांत उपयोगिता करों के सीमांत त्याग के बराबर हो जाती है। इसलिए राजस्व की क्रिया OF निश्चित की जाती है।

अगर राजस्व की क्रिया OF से बढ़कर OF_2 कर दिया जाए तो करों का सीमांत त्याग F_2C_2 अधिक होगा व्यय की सीमांत उपयोगिता F_2R_2 धाटा होगा। इसलिए सरकार को कर एवं व्यय OF_2 से धटाकर OF कर देना चाहिए। जिससे समाज को सारा धाटा समाप्त हो जाएगा। अगर कर एवं व्यय को 0F से धटा कर OF_1 कर दिया जाय तो व्यय की सीमान्त उपयोगित।. F_1R_1 अधिक होगी करों के सीमांत त्याग F_1C_1 की तुलना में इसलिए समाज को R_1C_1 लाभ प्राप्त होगा अतः सरकार को कर एवं व्यय के प्रत्येक तब तक वृद्धि करनी चाहिए जब तक समाज को लाभ प्राप्त होता रहेगा। अर्थात कर एवं कथय को OF_1 से बढ़क्कर OF कर देना चाहिए जहां करो का सीमांत त्याग व्यय के सीमांत उपयोगिता के बराबर हो जाती है। एवं अधिकतम सामाजिक लाभ की प्राप्ति होती हैं।

MUSGRAVE :- के अनुसार जिस बिन्दु पर भाुद्ध सामाजिक लाभ भाुन्य हो जाता है। उसी बिन्दु पर आर्दश बजट का निर्धारण हो जाता है।

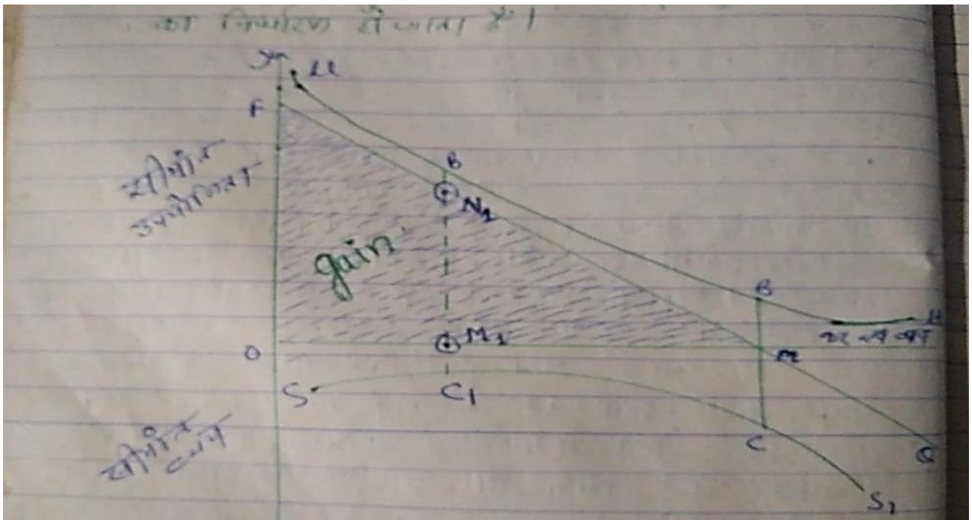

इस रेखा चित्र में OX अक्ष ऊपर सीमांत उपयोजिता एवं इसके नीचे सीमांत त्याग मापा गया हैं। $\mu\mu_1$ व्यय की सीमांत उपयोगिता एवं SS_1 करों के सीमान्त व्यय का वक्र है। इन दोनों वक्रों को धटाकर शुद्ध समाजिक लाभ की रेखा FMQ प्राप्त किया गया है। जैसे M_1 B_1-M_1C_1 =M_1 N_1 M बिन्दु पर शुद्ध सामाजिक लाभ शून्य हो जाता है। इसलिए कर एवं व्यय की राशि -OM निश्चित होगी। एवं अधिक तय समाजिक लाभ OF M प्राप्त होगा।

अधिकतम सामाजिक लाभ प्राप्त करने की विधियाँः

(1) करों का निर्धारणः ⟶ अधिकतम समाजिक लाभ की प्राप्ति के लिए करों को इस प्रकार निर्धारित किया जाना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति का सीमांत त्याग समान हो तभी समाज का कुल त्याग न्यूनतम होगा।

अंगली पृष्ट में अंकित रेखा चित्र में OA निम्न आय की OB मध्यम आय की एवं OC उच्च आय वर्ग के सीमांत त्याग की रेखाएँ है। जब निम्न आय वर्ग

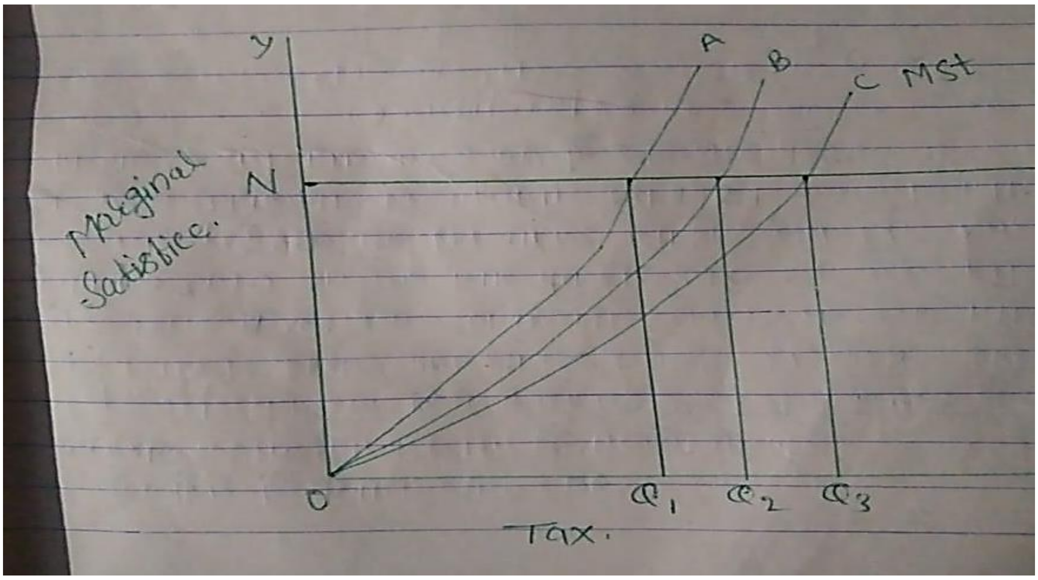

से OQ1 माध्यम आय वर्ग से OQ2 एवं उच्च आय वर्ग से OQ3 कर प्राप्त किया जाता है। तभी सभी वर्गों का सीमांत त्याग समान हो जाता है। एवं कुल त्याग न्यूनतय होता हैं।

(2) **सार्वजनिक आय का निर्धारण** : विभिन्ना वर्गो पर सार्वजनिक का व्यय द्वारा इस प्रकार विभाजित किया जाना चाहिए। कि प्रत्येक वर्ग को प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता अधिकतम होगी।

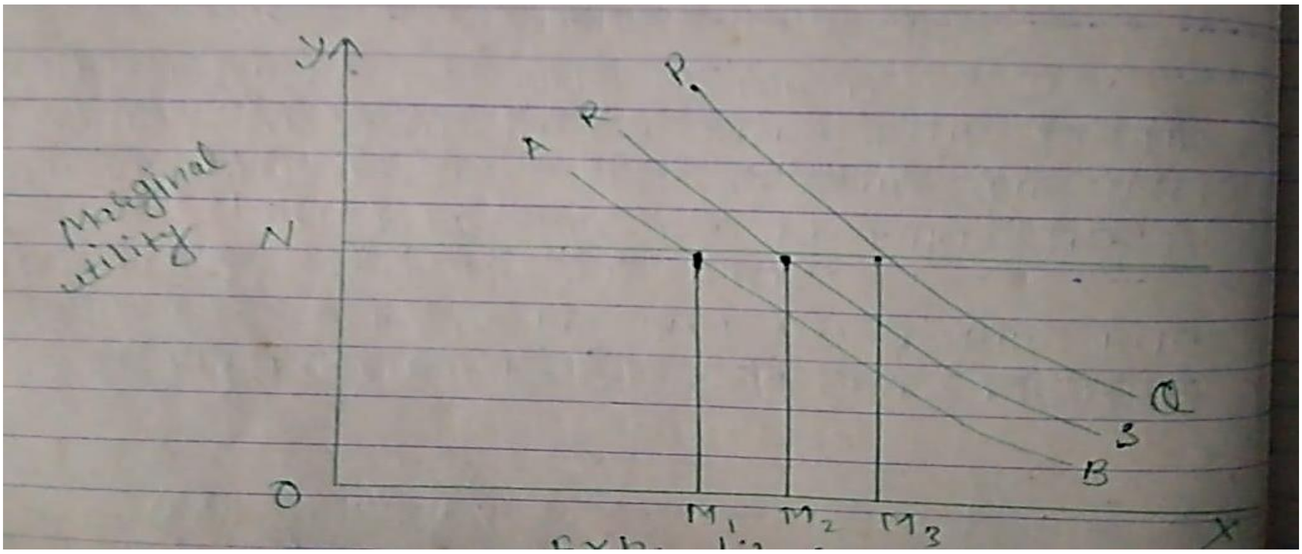

Expenditure

इस रेखा चित्र में AB उच्च आय वर्ग RS मध्यम आय वर्ग एवं PQ निम्न भाग को सार्वजनिक व्याम से प्राप्त होने वाले सीमान्त उपयोगिता का वक्र है। जब उच्च आय वर्ग पर OM_1 मध्यम आय को पर OM_2 एवं निम्न आय वर्ग पर OM_3 सार्वजनिक व्यय किया जाता है। सभी वर्गो को सीमांत उपयोगिता समान हो जाती है। एवं समाज की कुल उपयोगिता अधिकतम होता है।

3. **बेरोजगार का निराकरण**– जब–तक समाज में बेरोजगारी रहेगी समाज का उत्थान एवं लोगों का जीवन स्तर उंचा नहीं उठाया जा सकेगा। इसलिए अधिक समाजिक लाभ प्राप्त करने के लिए बेरोजगारी की समस्या का निराकरण आवश्यक हैं।

(4.) **आय एवं सम्पति की वितरण की असमानता को दूर करना**– घनी लोगों को सामाजिक सुख एवं आनन्द प्राप्त करने के अनेक अवसर उपलब्ध होते है। लेकिन गरीबों को ‘अत्यन्त कश्टमय जीवन बिताना पड़ता हैं। इसलिए अधिकतम सामाजिक लाभ की प्राप्ति के लिए आय की विशमता धटाना आवश्यक हैं।

(5) **आर्थिक स्थीरता**– मंदी तेजी एवं अन्य आर्थिक अस्थिरता कई सामाजिक बुराईयाँ को जन्म देता है। इसलिए अधिकतम समाजिक लाभ के लिए अर्थव्यवस्था में आर्थिक स्थीरता बनाया जाना आवश्यक है। जैसे – मुद्रा–स्फीति के समय सरकार को बचत का बजट Surplus Budget एवं मंदी के समय धाटे का बजर अपनाना चाहिए।

अधिकतम समाजिक लाभ का जाँच

TEST OF MAXIMUM SOCIAL ADVANTAGE

(1) **देश की सुरक्षा** – सार्वजनिक व्यय इस प्रकार किया जाना चाहिए की बाध्य आक्रमण एवं आन्तरिक अशान्ती से देश की रक्षा किया जा सके।

(2) **उत्पादन में वृद्धि**– उत्पादन में वृद्धि करने के लिए निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक हैं।

(a) उत्पादन में वृद्धि की जानी चाहिए जिससे कम लागत पर ही प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिकतम हों।

(b) उत्पादन के संगठन में सुधार किया जाय जिससे आर्थिक अपव्यय न्यूनतम हो।

(c) उत्पादन की संरचना एवं ढाँचे में सुधार किया जाना चाहिए।

(3) **वितरण में सुधार** –सरकार को ऐसी नीति अपनानी चाहिए कि आय एवं सम्पति की वितरण की समानता न्यूनतम हो तभी उस समाज में रहान सहन का स्तर ऊँचा हो पाएगा।

(4) **भविष्य को सुरक्षा**– सरकार को वर्तमान से अधिक महत्व भविष्य को देना चाहिए। भविष्य के कीमत पर वर्तमान का बनाना श्रेएश्कर नहीं होगा बलकी वर्तमान के कीमत पर भविष्य को बनाया जा सकता हैं।

<u>PRACTICAL Difficulties or limitation or CRITICISMES</u>:-

(1) करों के द्वारा होने वाले सीमान्त त्याग एवं सार्वजनिक व्यय की सीमान्त उपयोगिता की संस्थात्युक माप कठिन है। क्योंकि सही भावात्मक घटनाएं है।

(2) करों के सीमान्त त्याग एवं व्यय की सीमान्त उपयोगिता के बीच समानता स्थापित करना का व्यहारिक रूप से सम्भव नहीं हैं।

(3) सरकार भावी उपयोगिता के लिए आय प्राप्त करती है। एवं इसके लिए कर लगाया जाता है। करों का समाज पर तात्कालिक प्रभाव पड़ता है। लेकिन सार्वजनिक व्यय के भावी प्रभाव का वर्तमान में अध्ययन करना कठीन हैं।

(4) करों के द्वारा उपयोग बचत एवं लोगों की दक्षता में कभी होती है। लेकिन साथ मादक पत्र पदार्थों पर कर लगाए जाने से समाज को लाभ प्राप्त होता है। अतः करों के कुल प्रभाव की जानकारी अत्यन्त कठीन हैं।

(5.) करों के द्वारा आय की विषमता घटती है। कुछ लोगों को लाभ प्राप्त होता है। व्यय के द्वारा जबकि अन्य लोगों को धाटा होता है। इसलिए लाभ एवं धाटे की गणना अत्यन्त कठीन हैं।

(6.) सरकार की राजस्व की क्रियाओं का प्रभाव अत्यंत जटील होता है। अतः इन प्रभावों का अध्ययन करना अत्यन्त कठीन हैं।

निष्कर्षः →यद्यपि अधिकतम सामाजिक लाभ की सिद्धांत की कुछ व्यावहारिक कठिनाईयाँ हैं। लेकिन यही एक मात्र सिद्धांत है जिसके आधार पर कल्याणकारी राज्य संचालन कर सकता हैं।